रत्न सम्बन्धित जानकारी

एक अच्छी गुणवत्ता वाला रत्न मिल जाने पर इसे उस रत्न से सम्बन्धित व ग्रह से सम्बन्धित धातु से बनी अँगूठी अथवा लाकेट में धारण किया जा सकता है। रत्न को त्वचा के सम्पर्क में आना चाहिए, इसलिए यह ज्यादा अच्छा होगा कि इसे अँगूठी में पहना जाये, क्योंकि लाकेट में पहनने पर यह झूलता रहेगा अत: इसका प्रभाव अल्प रहेगा। इसलिए अँगूठी का आकार इस बात को ध्यान में रखकर चुनना चाहिए। सामान्यतः पुरुषों को दायें हाथ में, तथा महिलाओं को बायें हाथ में रत्न धारण करना चाहिए। सूर्योदय के एक घंटे पश्चात सबसे पहले व्यक्ति को स्नान करना चाहिए। फिर स्वच्छ कपड़े धारण करने चाहिए। यह अति आवश्यक है कि हम इन सभी कार्यों को अत्यधिक स्वच्छ ढंग से करें। पूर्व दिशा की ओर मुख करके, रत्न से सम्बन्धित देवता की मुर्ति के सामने पूजा करने हेतु बैठ जायें। फिर रत्न से बनी अँगूठी या लाकेट को पंचामृत में धोना चाहिए। यह पाँच चीजों से मिलकर बनता है; शुद्ध एवं कच्चा दूध, शहद, घी, चीनी एवं दही। पंचामृत स्नान के बाद रत्न को गंगाजल से धोना चाहिए। अगर गंगाजल उपलब्ध न हो, तो साफ जल भी प्रयोग में लाया जा सकता है। अब इस रत्न को साफ कपड़े से पौंछकर देवता के चरणों में रखनी चाहिए। अब रत्नों के मन्त्रों की जाप संख्या। जाप संख्या किसी कुशल ज्योतिषी से जानकारी लें। इन मन्त्रों का उच्चारण देवता को प्रसन्न करने के लिए होता है। सर्वप्रथम मूल मन्त्र का उच्चारण करें। इसके बाद ध्यान मन्त्र का एक बार जाप करना चाहिए। मन्त्रोंच्चारण के लिए 108 मनके की माला का प्रयोग किया जाता है। यह माला रुदाक्ष या क्रिस्टल की जपमाला के साथ किया जा सकता है। जपमाला का पूरा एक चक्र 108 बार मन्त्रों का जाप पूरा करता है। मन्त्रोंच्चारण करते समय एक मनका हाथ में होना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि जातक को सकारात्मक प्रतिफल प्राप्त हों। रत्न शुद्ध एवं साफ होने चाहिए। रत्न खंडित न हों, उचित वजन में हों, तभी रत्न प्रभावशाली होता है। रत्न को विश्वास के साथ धारण करने से अपेक्षित लाभ मिलता है। अपनी जन्मपत्रिका की कुशल ज्योतिषी से जांच करवा कर ही रत्न धारण करना चाहिए।

रत्न धारण करने के बाद वह समय सीमा तक ही प्रभावशाली होता है। रत्न का उपरत्न भी धारण किया जा सकता है। रत्न का समय निम्नलिखित है:-

1- माणिक्य 4 वर्ष

2- मोती 2 वर्ष

3- मूँगा 3 वर्ष

4- पन्ना 4 वर्ष

5- पुखराज 5 वर्ष

6- हीरा 7 वर्ष

7- नीलम 5 वर्ष

8- गोमेद 3 वर्ष

9- लहसुनिया 3 वर्ष

राशियों से सम्बन्धित रत्न, उपरत्न की जानकारी :-

जन्म राशि	रत्न	उपरत्न
1- मेष	मूँगा	लाल अकीक, लाल जिरकान
2- वृषभ	हीरा	स्फटिक, सफेद मूँगा
3- मिथुन	पन्ना	हरी तुरमली, जेड
4- कर्क	मोती	चन्द्रमणि
5- सिंह	माणिक्य	गार्नेट
6- कन्या	पन्ना	हरा तुरमली, जेड
7- तुला	हीरा	सफेद मूँगा, स्फटिक
8- वृश्चिक	मूँगा	लाल हकीक
9- धनु	पुखराज	पीला ओनेक्स
10- मकर	नीलम	लाजावर्त,नीली
11- कुम्भ	नीलम	लाजावर्त, नीली
12- मीन	पुखराज	सुनहला

क्र सं	मास	रत्न	अग्रेंजी नाम
1-	चैत्र	सूर्यकान्त	jasper
2-	वैशाख	हीरा	diamond
3-	ज्येष्ठ	पन्ना	emerald
4-	आषाढ़	मूँगा	coral

5-	श्रावण	माणिक्य	ruby
6-	भद्रपद	लालड़ी	spire ruby
7-	आश्विन	नीलम	blue sapphire
8-	कार्तिक	ओपल	opal
9-	मार्गशीर्ष	पुखराज	topaz
10-	पौष	फिरोजा	turquazee
11-	माघ	तामड़	garnet
12-	फाल्गुन	जमुनिया	emethyst

मास के अनुसार	सूर्य राशि	रत्न
15 अप्रैल से 14 मई तक	मेष	मूँगा
15 मई से 14 जून तक	वृषभ	हीरा
15 जून से 14 जुलाई तक	मिथुन	पन्ना
15 जुलाई से 14 अगस्त तक	कर्क	मोती
15 अगस्त से 14 सितम्बर तक	सिंह	माणिक्य
15 सितम्बर से 14 अक्तूबर तक	कन्या	पन्ना
15 अक्तूबर से 14 नवम्बर तक	तुला	हीरा
15 नवम्बर से 14 दिसम्बर तक	वृश्चिक	मूँगा
15 दिसम्बर से 14 जनवरी तक	धनु	पुखराज(पीला)
15 जनवरी से 14 फरवरी तक	मकर	नीलम
15 फरवरी से 14 मार्च तक	कुम्भ	नीलम
15 मार्च से 14 अप्रैल तक	मीन	पुखराज(पीला)

रत्न धारण व धातु व धारण करने का दिन

ग्रह	रत्न	धातु	दिन(धारण हेतु)
सूर्य	माणिक्य	सोना/ताँबा	रविवार
चन्द्रमा	मोती	चाँदी	सोमवार
मंगल	मूँगा	सोना/ताँबा	मंगलवार
बुध	पन्ना	स्वर्ण/ताँबा	बुधवार
गुरु	पुखराज	सोना/चाँदी/ताँबा	गुरुवार
शुक्र	हीरा	चाँदी/ प्लेटिनम	शुक्रवार
शनि	नीलम	लोह/पंचधातु	शनिवार
राहु	गोमेद	पंचधातु	बुध या शनि
केतु	लहसुनिया	पंचधातु	बुध या शनि